संचार तंत्र के सशक्तिकरण में हिन्दी की भूमिका

डॉ. हरि ओम फुलिया
सह आचार्य, हिंदी विभाग, आई.आई.एच.एस., कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

संचार (Communication) मनुष्य की भोजन, नींद और प्रेम की तरह अत्यधिक महत्वपूर्ण एवं मूलभूत आवश्यकता है।[1] बच्चों को सबसे बड़ी सजा तब महसूस होती है जब उनके माता-पिता कहते हैं कि वह उनसे बात नहीं करेंगे। बड़े अपराधी भी, जब जेल में भी अपनी हरकतों से काबू में नहीं आते हैं तो उन्हें सबसे दूर एकांत बैरकों में डाल दिया जाता है।

संचार वास्तव में मनुष्य का अपने वातावरण और समाज से बोल-चाल के जरिये संवाद के इतर शारीरिक तथा अन्य तरीकों से समन्वय बैठाना भी है। संवाद के जरिये ही हम दूसरों के प्रति प्रेम, घृणा, दया, क्रोध, खुशी, दुख, डर-भय एवं सुरक्षित अथवा खतरे में होने आदि के भाव भी प्रकट करते हैं। पृथ्वी पर मौजूद अन्य जीव-जंतुओं से इतर केवल मनुष्य ही एक-दूसरे से सुस्पष्ट तरीके से शारीरिक भाव-भंगिमाओं के इशारों से इतर शाब्दिक, लिखित, बोलकर-सुनकर संवाद कर सकता है। मानव में संचार-संवाद की क्षमता के विकास पर सिंहावलोकन करें तो पता चलता है कि ईशा से करीब तीन लाख वर्ष पूर्व रामापिथेकस युग (Ramapithecus age) में गुफाओं में रहने वाले हमारे प्राग ऐतिहासिक कालीन पूर्वजों में मस्तिक्षक एवं केंद्रीय तंत्रिका तंत्र (Central Nervous System) धीरे-धीरे विकसित होना प्रारंभ हुआ और बाद की उनकी पीढ़ियों में संचार के मूलभूत तत्व के रूप में देखने, सुनने, छूने, सूंघने एवं चखने की क्षमता युक्त ज्ञानेन्द्रियों का विकास हुआ, जिससे वे अपने खतरे में होने या सुरक्षित होने तथा किसी से प्रेम अथवा घृणा करने तथा किन्हीं स्थितियों के अनूकुल अथवा प्रतिकूल होने का पता लगाने की संचार की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति कर पाये थे। इन्हीं इंद्रियों के विकसित होने के बाद उन्होंने अपने रहने के सुरक्षित ठिकानों-गुफाओं का सहारा लिया होगा।

आगे करीब 50 हजार वर्ष पूर्व न्यमोनिक चरण (Mnemonic Stage) में वे लोग बुद्धिमान कहे जाते थे, जो कुछ याद कर पाते थे। यह मनुष्य में याददाश्त की क्षमता के जुड़ने का समय था। उस दौर में सामाजिक संचार प्रारंभ हो गया था लेकिन भाषाओं का जन्म नहीं हुआ था।

आगे ईशा से करीब सात हजार वर्ष पूर्व मानव संचार के एक नये चि बनाने का माध्यम (Pictographics) की योग्यता जुड़ी, जिसके साथ उसमें रचनात्मकता व कल्पनाशीलता का विकास भी हुआ। इसके बाद मानव गुफाओं में चित्र बनाकर अपने भावनायें प्रदर्शित करने लगे। इस दौर में मनुष्य में धार्मिक भावनाओं का उद्भव भी हुआ। इस दौर के बनाये गुफा-शैलचित्र आज भी उत्तराखंड के लुखडियार सहित अनेक स्थानों पर मिलते हैं।

आगे ईशा से तीन हजार से दो हजार वर्ष पूर्व के दौर में शैलचित्र बनाने की मानव की विधा बेहतर हुई और सर्वप्रथम भावनाओं के लिये 'प्रतीकों' का उद्भव हुआ। इस काल को आइडियोग्राफ काल (Ideographic Stage) भी कहते हैं। इस दौर में मानव ने सामाजिक समूहों में घर बनाकर रहना प्रारंभ कर दिया था। साथ ही उसमें सामाजिक कार्यक्रमों और नैतिक मूल्यों आदि का विकास हो चुका था। इस काल में चित्र प्रतीकों के रूप में छोटे हो गये थे। जैसे मनुष्य के लिए 'λ', घर के लिये '9', बैल के लिये '∀', दरवाजों के लिये 'Δ', ऊंट के लिये '7' आदि चिन्हों का प्रयोग किया जाता था। आगे फोनेटिक काल में 'क' के लिये '4' 'न' के लिये '⊥' आदि चिन्हों का प्रयोग किया जाने लगा।[2]

आगे मानव सभ्यता के विकास के साथ अंतरवैयक्तिक संचार बढ़ने लगा। अब तक लोग एक-दूसरे से आमने सामने ही बात करते थे, लेकिन अब वह दूर तक अपनी बात पहुंचाने के उपाय भी ढूंढने लगे और दूर संदेश भेजने के लिए ऐसे लोगों (Relay Runners) का प्रयोग किया जाने लगा जो बीते दौन के डाक विभाग के हरकारों की तरह एक से दूसरे स्थान पर संदेशों को ले जाते थे। इस तरीके से भी कई बार संदेश पहुंचाने में दिनों-महीनों का समय लग जाता था।

प्रिंट पत्रकारिता :

पत्रकारिता हिंदी में पत्र शब्द से बना हुआ शब्द है। इसीसे एक अन्य शब्द बना-पत्रकार। तथा पत्रकार शब्द से

शब्द बना पत्रकारिता। शाब्दिक तौर पत्रकार व पत्रकारिता शब्दों को सरलतम तरीके से समझें तो कह सकते हैं कि जो लोग पत्रकारिता का कार्य करते हैं, व पत्रकार हैं। और पत्रकार जो कार्य करते हैं व पत्रकारिता है। चूंकि पत्रकारिता प्रिंट यानी लिखित माध्यम से शुरू हुई है, इसलिये प्रिंट पत्रकारिता शब्द के लिये केवल पत्रकारिता शब्द का प्रयोग भी प्रारंभ से किया जाता रहा है। यह भी कह सकते हैं कि पत्रकारिता शब्द का प्रयोग सामान्यतया प्रिंट पत्रकारिता के लिये ही किया जाता है।

वहीं अंग्रेजी में पत्रकारिता 'जर्नलिज्म' शब्द का अनुवार है। 'जर्नलिज्म' शब्द में फ्रेंच शब्द 'जर्नी' या 'जर्नल' यानी दैनिक शब्द समाहित है। जिसका तात्पर्य होता है, दिन-प्रतिदिन किए जाने वाले कार्य। पहले के समय में सरकारी कार्यों का दैनिक लेखा-जोखा, बैठकों की कार्यवाही और क्रियाकलापों को जर्नल में रखा जाता था, वहीं से पत्रकारिता यानि 'जर्नलिज्म' शब्द का उद्भव हुआ। 16वीं और 18वीं सदी में पीरियोडिकल के स्थान पर डियूरलन और 'जर्नल' शब्दों का प्रयोग हहुआ। बाद में इसे 'जर्नलिज्म' कहा जाने लगा। जबकि हिंदी में पत्रकारिता शब्द तो नया है, लेकिन विभिन्न माध्यमों द्वारा पौराणिक काल से ही पत्रकारिता की जाती रही है। जैसा कि विदित है मनुष्य का स्वभाव ही जिज्ञासु प्रवृत्ति का होता है। और इसी जिज्ञासा के चलते आरम्भ में ही उसने विभिन्न खोजों को भी अंजाम दिया। पत्रकारिता के उद्भव और विकास के लिए इसी प्रवृत्ति को प्रमुख कारण भी माना गया है।

अपनी जिज्ञासु प्रवृत्ति के चलते मनुष्य अपने आस-पास घटने वाली घटनाओं को जानने का उत्सुक रहता है। वो न केवल अपने आस पास साथ ही हर विषय को जानने का प्रयास करता है। समाज में प्रतिदिन होने वाली ऐसी घटनाओं और गतिविधियों को जानने के लिए पत्रकारिता सबसे बहु उपयोगी साधन कहा जा सकता है। इसीलिए पत्रकारिता को जल्दी में लिखा गया इतिहास भी कहा गया है। सामज में हर पहलू और आत्मीयता के साथ जुड़ाव के कारण ही पत्रकारिता को कला का दर्जा भी मिला हुआ है। पत्रकारिता का क्षेत्र अत्यन्त व्यापकता लिए हुए है। इसे सीमित शब्दावली में बांधना कठिन है। पत्रकारिता के इन सिद्धान्तों को परिभाषित करना कठिन काम है।

विश्व व भारत में पत्रकारिता के इतिहास

यूं हड़प्पा व मोहनजोदड़ो की खुदाई में लेखन कला को 5000 वर्ष पुराना बताया गया है, यानि ईशा से तीन हजार वर्ष पूर्व होना माना जा सकता है। विश्व में पत्रकारिता का आरंभ रोम से होना बताया जाता है। कहते हैं कि पांचवीं शताब्दी ईसवी पूर्व रोम में संवाद लेखक होते थे, जो हाथ से लिखकर खबरें पहुंचाते थे। आगे **ईशा से 131-59 ईस्वी पूर्व रोम में ही सम्राट जूलियस सीजर को पहला दैनिक समाचार-पत्र निकालने का श्रेय** दिया जाता है। उनके पहले समाचार पत्र का नाम था 'Acta Diurna' (एक्टा डाइएर्ना-यानी दिन की घटनाएं)। बताया जाता है कि यह वास्तव में पत्थर या धातु की पट्टी होता था, जिस पर समाचार अंकित होते थे। ये पट्टियां रोम के मुख्य स्थानों पर रखी जाती थीं, और इनमे सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों की नियुक्ति, नागरिकों की सभाओं के निर्णयों और ग्लेडिएटरों की लड़ाइयों के परिणामों के बारे में सूचनाएं मिलती थी।

आगे ईसा के बाद दूसरी शताब्दी में मुद्रण तकनीक के आविष्कार को लेकर कुछ प्रमाण बताए जाते हैं। इस दौर में यूरोप के व्यापारिक केंद्रों में हाथ से ही लिखे हुए 'सूचना पत्र' निकलने लगे। उनमें कारोबार, क्रय-विक्रय और मुद्रा के मूल्य में उतार-चढ़ाव के समाचार लिखे जाते थे।

इसी दौरान कागज के निर्माण की कोशिशें भी चल रही थी। चीन में सर्वप्रथम 100 वर्ष ईशा पूर्व कागज का निर्माण हुआ, लेकिन चीन ने सातवीं शताब्दी तक कागज के निर्माण की प्रक्रिया को गुप्त रखा। कहते हैं कि 751 ईसवी में चीनियों और अरबियों के बीच हुए युद्ध में कागज बनाना जानने वाले कुछ लोग बंदी बना लिए गए, जिन्हें कागज़ बनाने की विधि बताने के बाद ही छोड़ा गया। इसी बीच 400 ईसवी सन् में भारत ने भी कागज बनाना सीख लिया था, जबकि यूरोप में कागज की जगह जानवरों के चमड़े का इस्तेमाल होता था। 1200 ईसवी में इसाइयों ने और 1250 में स्पेन, 1338 में फ्रांस, 1411 में जर्मनी के लोगों ने कागज बनाना सीखा। स्याही का निर्माण भी सर्वप्रथम चीनियों ने ही किया।

लकड़ी के ठप्पों से छपाई का काम भी सबसे पहले पांचवीं-छठी शताब्दी में चीन में ही शुरू हुआ। इन ठप्पों का प्रयोग कपड़ों की रंगाई में होता था। 11वीं सदी में चीन में पत्थर के टाइप बनाए गए, ताकि अधिक प्रतियां छापी जा सकें। 13वीं-14वीं सदी में चीन ने अलग-अलग संकेत चिन्ह भी बनाए। इसके बाद धातु के टाइप बनाने की कोशिश हुई।

आधुनिक दौर की उपकरण (माध्यम-Media) आधारित पत्रकारिता

आधुनिक दौर की उपकरण आधारित जन संचार यानि (Mass Communication) पत्रकारिता की शुरुआत 15वीं शताब्दी में ही प्रारंभ हो पायी। धातु के टाइपों से पहली पुस्तक 1409 ईसवी में कोरिया में छापे जाने की बात कही जाती है, लेकिन प्रमाणिक तौर पर 1439 में जर्मनी के योहानेस गुटेनबर्ग ने धातु के लगाये-हटाये जाने युक्त (Movable) ठप्पों से अक्षरो को छापने की मशीन का आविष्कार किया। उन्होंने इस मशीन से 1453 में प्रथम मुद्रित पुस्तक 'कांस्टेंन मिसल' तथा 'गुटेनबर्ग बाइबल' के नाम से प्रसिद्ध बाइबल भी छापी। इसके बाद ही किताबों और अखबारों का प्रकाशन संभव हो गया। अलबत्ता, यह मशीन सर्वसुलभ नहीं थी।4

प्रिंटिंग प्रेस के आविष्कार के बाद काफी समय तक किताबें और सरकारी दस्तावेज ही उनमें मुद्रित हुआ करते थे। 1500 ईसवी तक पूरे यूरोप में सैंकड़ों छापेखाने खुल गये थे। नीदरलैंड से 1526 में न्यू जाइटुंग का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। तब इसे 'समाचार पुस्तिका' यसा 'न्यूज बुक' कहा जाता था। इसके बाद लगभग एक शताब्दी तक कोई दूसरी कोई समाचार पत्रिका प्रकाशित नहीं हुई।

सोलहवीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में जबकि पूरा यूरोप युद्धों को झेल रहा था, और सामंतवाद लगातार अपनी शक्ति खो रहा था तथा अनेक विचारधाराएं उत्पन्न हो रही थी। इस दौर मे लेखक अपने समकालीन लोगों में ग्रंथकार, घटना लेखक, सार लेखक, समाचार लेखक, समाचार प्रसारक, रोजनामचा नवीस, गजेटियर के नाम से जाने और सम्मान पाते थे। इस दौरान 'आक्सफोर्ड गजट' और फिर लंदन गजट' निकले जिनके बारे में कहा गया है, 'बहुत सुंदर समाचारों से भरपूर 'जैसा का तैसा छापना' माना जाता था।

16 वीं शताब्दी के अंत तक यूरोप के शहर स्त्रास्बुर्ग में योहन कारोलूस नाम का करोबरी धनवान ग्राहकों के लिये सूचना-पत्र लिखवकर प्रकाशित करता था। लेकिन हाथ से बहुत सी प्रतियों की नकल करने का काम महंगा होने के साथ धीमा भी था। आखिर 1605 में उसने छापे की मशीन खरीदर कर 'रिलेशन' नाम का समाचार-पत्र प्रारंभ किया, जिसे विश्व का प्रथम मुद्रित समाचार पत्र माना जाता है। उल्लेखनीय है कि उस दौर में 'न्यूज बुक या 'समाचार पुस्तिक' शब्द को प्रयोग होता था। लेकिन 'न्यूज पेपर' या 'समाचार पत्र' शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख वर्ष 1670 में मिलता है।

आगे आधुनिक पत्रकारिता की गति 18वीं शताब्दी में कागज़ बनाने वाली और कागज को जरूरी आकारों को काटने वाली मशीनें के आविष्कार के साथ मिली। दैनिक समाचार पत्रों को इतिहास पहले अंग्रेजी दैनिक 'डेली करंट' के 11 मार्च 1709 को प्रकाशन के साथ प्रारंभ हुआ। लेकिन तब तक भी कागज आज की तरह का न था। कागज का आधुनिक रूप फ्रांस के निकोलस लुईस राबर्ट ने 1778 ई में बनाया। इसके साथ ही लिखित पत्रकारिता में वास्तविक जनसंचार (Mass Communication) का अभ्युदय हुआ।4

भारत में पत्रकारिता का आरंभ

यों, हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो में हुए उत्खनन से प्राप्त मृदभांडों के अनुसार भारत में 5000 वर्ष पूर्व यानी ईशा से 3000 वर्ष पूर्व लेखन का ज्ञान था, लेकिन छपाई का काम लगभग पांचवीं-छठी शताब्दी में चीन के साथ ही प्रारंभ होना बताया जाता है। इसी दौरान यहां कागज का निर्माण भी होने लगा था। लेकिन समाचार पत्रों का इतिहास यूरोपीय लोगों के भारत में प्रवेश के साथ प्रारम्भ होता है। सर्वप्रथम भारत में प्रिंटिंग प्रेस लाने का श्रेय पुर्तगालियों को दिया जाता है, उनकी कोशिश अपने धर्म के प्रचार की थी, इसलिए वह अपनी प्रेस का इस्तेमाल धार्मिक पुस्तकों के प्रकाशन के लिए ही अधिक करते थे। 1557 ईसवी में गोवा के कुछ पादरियों ने भारत की पहली पुस्तक छापी। 1558 में तमिलनाडु में और 1602 में मालाबार के तिनेवली में दूसरी प्रेस लगाई गयी। बाद में 1679 में बिचुर में एक और प्रेस की स्थापना किए गये। वहीं अंग्रेजों ने भारत में छापे की पहली मशीन 1674 में बम्बई में स्थापित की और 1684 ईसवी में ईस्ट इंडिया कम्पनी ने भारत की पहल पुस्तक की छपाई की थी। 1684 में ही कम्पनी ने भारत में प्रथम प्रिंटिंग प्रेस (मुद्रणालय) की स्थापना की। इसके बाद 1772 में चेन्नई और 1779 में कोलकता में सरकारी छापेखाने की स्थापना हुयी। 1772 तक मद्रास और अठारहवीं सदी के अंत तक भारत के लगभग ज्यादातर नगरों में प्रेस स्थापित हो गये थे। मगर भारत का पहला अखबार 1776 में प्रकाशित हुआ। इसका प्रकाशक ईस्ट इंडिया कंपनी का भूतपूर्व अधिकारी विलेम बॉल्ट्स था। यह अखबार अंग्रेजी भाषा में निकलता था तथा

कम्पनी व सरकार के समाचार फैलाता था। लेकिन इस पत्र को अनेक लोग अखबार ही नहीं मानते।

हिकीज बंगाल गजट भारत का पहला समाचार पत्र

भारत में पत्रकारिता का विधिवत् प्रारम्भ जेम्स आगस्ट्स हिकी ने 29 जनवरी 1780 में कलकत्ता से हिकीज बंगाल गजट के नाम से अखबार निकाल कर, पत्रकारिता की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल की। इसे ही देश का सबसे पहला समाचार पत्र कहा जाता है। 'हिकीज बंगाल गजट' 'दि ऑरिजिनल कैलकटा जनरल एड्वरटाइजर' भी कहलाता था। अखबार में ईस्ट इंडिया कंपनी के वरिष्ठ अधिकारियों के व्यक्तिगत जीवन पर लेख छपते थे हिकी ने इसके एक अंक में गवर्नर की पत्नी पर आक्षेप किया तो उसे चार महीने के लिये जेल भेजा गया और 500 रुपये का जुर्माना लगा दिया गया। लेकिन हिकी ने शासकों की आलोचना करने से परहेज नहीं किया, और जब उसने गवर्नर और सर्वोच्चा नयायाधीश की आलोचना की तो उस पर 5000 रुपये का जुर्माना लगाया गया, और एक साल के लिये जेल में डाला गया। इस तरह उस का अखबार बंद हो गया।

हिकीज बंगाल गजट के बारे में हिकी ने कहा था-''यह राजनीतिक और आर्थिक विषयों का साप्ताहिक पत्र है और इसका सम्बन्ध हर दल से है, मगर यह किसी दल के प्रभाव में नहीं आएगा। वहीं स्वयं के बारे में हिक्की की धारणा थी-'मुझे अखबार में छाने का विशेष चाव नहीं है, न मुझमें इसकी योग्यता है कठिन परिश्रम करना मेरे स्वभाव में नहीं है, तब भी मुझे अपने शरीर को कष्ठ देना स्वीकार है। ताकि मैं मन और आत्मा की स्वाधीनता प्राप्त कर सकूं।' दो पृष्ठों के तीन कालम में दोनों ओर से छपने वाले इस अखबार के पृष्ठ 12 इंच लंबें और 8 इंच चौड़े थे। इसमे हिक्की का विशेष स्तंभ 'एपोयट्स' कार्नर होता था।

इलेक्ट्रानिक मीडिया

इलेक्ट्रानिक मीडिया की शुरुआत रेडियो के साथ 20 शताब्दी की शुरूआत में हुई, जिसके माध्यम से ध्वनि संदेशों को उपग्रहों की सहायता से बिना समय लगाये दूर से दूर के स्थानों पर भेजा जा सकता था, यानि अब तक संदेशों को पहुंचाने में जो समय लगने की समस्या थी, उसका निदान हो गया। इसी कड़ी में आगे पहले स्टिल फोटो कैमरे, बाद में चलते-फिरते चित्र खींचने के कैमरे व वीडियो टेप, वीडियो को देखने के वीडियो प्लेयर तथा आखिर टेलीविजन के आविष्कार से चलते-फिरते चित्रों को तत्काल-लाइव कवरेज करते हुये भी विश्व के किसी भी कोने में प्रसारित करने की सुविधा मिल गयी।

इलेक्ट्रानिक मीडिया मुद्रित व प्रकाशित शब्दों से आगे का मीडिया है। हालांकि छपे शब्दों की महत्ता अपनी जगह है, और रहेगी, लेकिन आज इलेक्ट्रानिक मीडिया का जादू सचमुच सर चढ़ कर बोल रहा है। मोटे तौर जब हम इलेक्ट्रानिक मीडिया शब्द का प्रयोग करते हैं तो प्रायः उसका अभिप्राय टेलीविजन से होता है। हालांकि इलेक्ट्रानिक मीडिया सिर्फ टेलीविजन ही नहीं है। रेडियो को इलेक्ट्रानिक मीडिया की पहली बड़ी सीढ़ी माना जा सकता है, तो आज टेलीविजन को भी पीछे छोड़कर इंटरनेट तथा मोबाइल फोन इलेक्ट्रानिक मीडिया को नया विस्तार दे रहे हैं।

आज प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रानिक मीडिया तकनीक के मामले में लगभग एक ही स्तर पर आ गए हैं। खबरें भेजने, उन्हें प्रकाशित करने, खबरें जुटाने व ले आऊट बनाने आदि सारे काम प्रिंट मीडिया में भी वैसे ही हो रहे हैं जैसे इलेक्ट्रानिक मीडिया में। अन्तर सिर्फ इतना है कि इलेक्ट्रानिक मीडिया उसे दृश्य-श्रव्य रूप में भी प्रस्तुत कर लेता है। यही अंतर इलेक्ट्रानिक मीडिया की ताकत है और यही उसकी कमजोरी भी।

आज के युग में इलेक्ट्रानिक मीडिया की शक्ति, उसका प्रभाव और उसकी क्षमता किसी से भी छिपी नहीं है। बीसवीं सदी में पैदा हुए इस संचार माध्यम के सभी घटक जैसे रेडियो, टीवी इंटरनेट और मोबाइल आज हर आधुनिक व्यक्ति के जीवन का अभिन्न अंग बन चुके हैं। इलेक्ट्रानिक मीडिया ने हमारी जिन्दगी को भी काफी हद तक प्रभावित कर दिया है। इसने जानकारी का प्रसार तेज कर दिया है और उसकी विश्वसनीयता भी बढ़ा दी है।

अपने देश के संदर्भ में देखें तो 15-20 वर्ष पहले तक टेलीविजन इतना जनसुलभ नहीं था। दूरदर्शन के हाथों में उसका नियंत्रण था। लेकिन देखते-देखते ही निजीकरण के बादी इलेक्ट्रानिक मीडिया घर-घर पहुंच गया। आज देश मे 300 से अधिक टीवी चैनल दिखाई दे रहे हैं जिनमें से 125 से अधिक किसी न किसी रूप में न्यूज से जुड़े हैं। 50 से अधिक

एफ.एम. चैनलों की भी अलग धूम है। बड़े महानगरों में जहां एफ एम सुनते-सुनत काम पर निकलने वाले लोग कहां से जाएं, कहां से न जाएं जैसी जरूरी जानकारियां पा लेते हैं, खबरों की दुनिया से रूबरू हो जाते हैं और बिना अतिरिक्त प्रयास के उन्हें ताजातरीन जानकारियां भी मिल जाती हैं। ऐसे में इलेक्ट्रानिक मीडिया आज उच्च वर्ग के लोगों की जरूरत बन चुका है। शहरों में शायद ही कोई घर ऐसा होता हो जहां शाम से रात तक टीवी सेट खोला न जाता हो। आज इस माध्यम ने पकड़ भी बना ली है और उसी के अनुरूप ताकत भी हासिल कर ली है।

पत्रकारिता में कहा जाता है कि एक चित्र 10 हजार शब्दों के बराबर होता है, ऐसे में यह कल्पना सहज ही की जा सकती है कि जहां हजारों तस्वीरें हो तो वहां उनकी ताकत क्या होगी, यह हमेशा कहा जाता है कि कानों सुनी से ज्यादा आंखों देखी बातों पर यकीन किया जाना चाहिए। टेलीविजन आंखों से ही सब कुछ दिखाता है इसलिए उस पर यकीन भी अधिक किया जाता है। टेलीविजन की सफलता का रहस्य इसी तथ्य में छिपा हुआ है।

लेकिन जिन लोगों ने टीवी युग से पहले रेडियो में खेलों की कैमेंट्री का मजा लिया है वे जानते हैं कि सुने हुए शब्दों की ताकत क्या होती है। जब कैमेंटेटर अपनी आवाज के उतार चढ़ाव के साथ हॉकी या क्रिकेट के खेल का आंखों देखा हाल सुना रहा होता था तो श्रोता उसके शब्दों के साथ-साथ एक गोलपोस्ट से दूसरे गोलपोस्ट तक की यात्रा करने लगता था। आज तो मोबाइल, इंटरनेट आदि ने दुनिया को ओैर भी छोटा बना दिया है और दुनिया हर किसी की पहुंच में आ गई है। फिर भी यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि इलेक्ट्रानिक मीडिया की बादशाहत अब भी टीवी के हाथ में ही है।

हालांकि यह भी सच है कि इलेक्ट्रानिक मीडिया और खास तौर पर टेलीविजन अब भी आम आदमी का मीडिया नहीं बन सका है। इसकी वजह आर्थिक है। भारत में टेलीविजन का विकास मध्य वर्ग के आसपास ही हुआ है। शहरी मध्य वर्ग तक ही यह सबसे पहले सुलभ भी था। उसी की रूचि को ध्यान में रखकर कार्यक्रम बनाए गए और आज भी वही वर्ग टीवी व्यवसाय के केन्द्र में है। टैक्नोलॉजी ड्रिवन मीडिया होने के कारण भी इलेक्ट्रानिक मीडिया की कुछ सीमाएं हैं लेकिन इस सबके बावजूद यह कहा जा सकता है कि देश के इलेक्ट्रानिक मीडिया ने अपने शैशव काल में ही अपनी धाक जमा ली है।

इलेक्ट्रानिक मीडिया का प्रभाव

इलेक्ट्रानिक मीडिया अपने स्वरूप में प्रिंट मीडिया से एकदम अलग है। भले ही इसका विकास प्रिंट मीडिया से ही हुआ है, और प्रिंट मीडिया के ही आदर्शों और परम्पराओं की छाया में यह फल-फूल रहा है। लेकिन इसका स्वरूप इसे कई मायनों में प्रिंट मीडिया से एकदम अलग बना लेता है।

विश्व के किसी एक भाग में हो रहे किसी आयोजन, घटना या किसी संवाददाता सम्मेलन के सजीव प्रसारण को उसी वक्त साथ-साथ सारे विश्व में उसे दिखाया या सुनाया जा सकता है। वस्तुतः इलेक्ट्रानिक मीडिया की अवधारणा ही खबरों के तेज, सजीव, वास्तविक और व्यापक प्रसारण से जुड़ी है। खबरों को सबसे तेज अभवा सजीव दिखा व सुनाकर, जैसा हो रहा है वैसा ही दिखा व सुनाकर इलेक्ट्रानिक मीडिया चमत्कारपूर्ण प्रभाव पैदा कर देता है।

हमारे देश में एक दौर में बीबीसी की खबरें घर-घर सुनी जाती थी। अफ्रीका के गृह युद्धों, अमेरिका के चांद पर पहुंचने और जवाहर लाल नेहरू की मोत जैसी खबरें बीबीसी रेडियो ने क्षण भर में पूरी दुनिया में पहुंचा दी थी। भारत में टेलीविजन में भी निजी क्षेत्र के आगमन के बाद की घटनाएं जैसे गुजरात का भूकंप, कारगिल का युद्ध, लोकसभा चुनाव और सुनामी आदि ऐसे मौके थे जब इलेक्ट्रानिक मीडिया के बादशाह टेलीविजन ने दर्शकों को घर बैठे-बैठे इन जगहों तक पहुंचा दिया था।

इसलिये यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि इस तरह की घटनाओं के कवरेज ने देश में टेलीविजन न्यूज को एक व्यापक पहचान भी दी और विश्वसनीयता भी। घटनास्थल को सीधे टीवी स्क्रीन तक पहुंचा पाने की इसी ताकत में टेलीविजन की लोकप्रियता का राज छिपा हुआ है।

अमेरिका में 'वर्ल्ड ट्रेड टावर' पर हुए हमलों को दुनिया ने टेलीविजन के जरिए देखा और जिसने भी उन दृश्यों को देखा है, उन सबके मन में वो पूरी घटना इस तरह अंकित हो गई कि मानो उन्होंने खुद अपनी आंखों से उसे देखा हो। घटना को वास्तविक या सजीव रूप में दिखा पाने की क्षमता इलेक्ट्रानिक मीडिया की एक बड़ी ताकत है तो, इसकी पहुंच, इसकी

दूसरी बड़ी ताकत है।

एक मुद्रित अखबार या पत्रिका का सीमित प्रसार क्षेत्र होता है लेकिन इलेक्ट्रानिक मीडिया के लिए विस्तार और प्रसार की कोई सीमाएं नहीं हैं। अमेरिका की 26/11 की घटनाएं पूरी दुनिया ने लगभग एक साथ देखीं। घटना का सजीवन होते देखना अपने आप में एक रोमांचक अनुभव है। दर्शक उस घटना के एक पात्र की तरह उससे जुड़ जाता है। ऐसा कर पाना किसी दूसरे संचार माध्यम के लिए सम्भव नहीं है।

इलेक्ट्रानिक मीडिया को प्रभावशाली बनाने वाली एक और बड़ी ताकत इसकी भाषा है। अखबार पढ़ने के लिए आदमी का साक्षर होना जरूरी है। दूसरी भाषा का अखबार पढ़ने के लिए उस भाषा का ज्ञान होना जरूरी है लेकिन सजीव चित्रों की भाषा इनमें से किसी की भी मोहताज नहीं। 26/11 की घटना में ट्विन टावर्स से अज्ञात विमानों का टकराना, टावर्स में आग लग जाना और उसके बाद का विध्वंस, सजीव चित्रों ने इसकी जो कहानी दिखाई उसके लिए किसी भाषा या शब्दों की जरूरत नहीं थी। संप्रेषण की यह खूबी भी इलेक्ट्रानिक मीडिया की एक बड़ी ताकत है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि दृश्य-श्रव्य स्वरूप वाला इलेक्ट्रानिक मीडिया अपने प्रसार के विस्तार, घटना स्थल से सीधे घटना को दिखा सकने की ताकत और शब्दों तथा भाषा से उपर उठकर लिए जाने वाले संप्रेषण के कारण आज सबसे सशक्त जन संचार माध्यम बन चुका है।

रेडियो

इलेक्ट्रानिक मीडिया का पहला क्रांतिकारी कदम रेडियो को माना जाता है। उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशक में सन् 1895 में इटली के वैज्ञानिक गुगलीनो माकोनी ने बेतार संकेतों को इलेक्ट्रोमैग्नेटिक हार्टीजियन तरंगों द्वारा प्रसारित करने में सफलता हासिल कर रेडियो की अवधारणा को जन्म दिया। जल्द ही रेडियो, टेलीफोन और बेतार का तार समुद्री यातायात में संचार का प्रमुख साधन बन गये। प्रथम विश्व युद्ध में सैनिक संचार और प्रचार के लिए भी रेडियो का खूब इस्तेमाल हुआ था। विश्व युद्ध के बाद रेडियो का इस्तेमाल जनसंचार मीडिया के तौर पर किए जाने के लिए परीक्षण शुरू हुए और 1920 में अमेरिका के पिट्सवर्ग में दुनिया का पहला रेडियो प्रसारण केन्द्र स्थापित हुआ। 23 फरवरी 1920 को मारकोनी की कम्पनी ने भी चैम्सफोर्ड, इंगलैण्ड से अपने पहले रेडियो कार्यक्रम का सफल प्रसारण किया। 14 नवम्बर 1922 को लन्दन में ब्रिटिश ब्राडकास्टिंग कंपनी की स्थापना हुई। मारकोनी भी इसके संस्थापकों में एक थे। एक जनवरी 1927 को इस कंपनी को ब्रिटिश ब्राडकास्टिंग कार्पोरेशन यानी बीबीसी में परिवर्तित कर दिया गया।

भारत में 8 अगस्त 1921 को टाइम्स ऑफ इण्डिया के मुम्बई कार्यालय ने एक विशेष रेडियो संगीत कार्यक्रम का प्रसारण कर भारत में रेडियो प्रसारण की नींव रखी। इस प्रसारण को पुणे तक सुना गया था। इसी के साथ पश्चिम की तरह भारत में भी शौकिया रेडिया क्लबों की स्थापना हाने लगी। 13 नवम्बर 1923 को कोलकाता से रेडियो क्लब ऑफ बंगाल ने 8 जनू 1924 को बाम्बे रेडियो क्लब मुम्बई ने अपने प्रसारण शुरू किए। साथ ही चेन्नई, कराची तथा रंगून में भी ऐसे ही प्रसारण केन्द्र शुरू हो गए। आर्थिक अभावों के कारण प्रायः ये सभी रेडियो क्लब दीर्घजीवी नहीं रह पाए लेकिन इसके बावजूद रेडियो की लोकप्रियता कम नहीं हुई।

23 जुलाई 1927 को चेन्नई में इण्डियन ब्राडकास्टिंग कंपनी (आईबीसी) का विधिवत उद्घाटन तत्कालीन वायसराय लार्ड इरविन द्वारा किया गया। उस समय भारत में कुल 3594 रेडियो सेट थे। तब रेडियो सेट रखने के लिए सरकार से लाइसेंस लेना पड़ता था। लगातार घाटे के कारण जल्द ही आईबीसी को बन्द करने की नौबत आ गई लेकिन रेडियो सुनने के आदी हो चुके लोगों के तीव्र विरोध के कारण सरकार ने इसका प्रसारण जारी रखने का फैसला किया और 1 अप्रैल 1930 को इण्डियन स्टेट ब्राडकास्टिंग सर्विस की स्थापना हुई जो बाद में आकाशवाणी में परिवर्तित हो गई।

आज आकाशवाणी दुनिया का सबसे बड़ा रेडियो नेटवर्क हो चुका है। एक अरब से अधिक लोगों तक इसकी पहुंच है। देश भर में आकाशवाणी के 250 से अधिक छोटे बड़े केन्द्र है। 25 से अधिक भाषाओं और 150 से अधिक बोलियो में इसके कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। एफ एम (फ्रीक्वेंसी मोड्युलेटर) सेवा की शुरूआत के साथ भारत में रेडियो को एक नया जीवन मिला है। आज आकाशवाणी के साथ-साथ प्रायः हर बड़े शहर में एक दो निजी एफएम रेडियो प्रसारण हो रहे हैं,

और लोगों को मनोरंजन के साथ सूचना भी उपलब्ध करा रहे हैं।

रेडियो टैक्नोलॉजी के डिजीटल हो जाने से भी रेडियो को नया जीवन मिल गया है और अब तो वर्ल्ड स्पेस रेडियो भी भारत में उपलब्ध है। देश में आज 25 करोड़ से अधिक रेडियो सेट हैं और आज भी दूर दराज के इलाकों में सूचना और संचार का यह सबसे भरोसेमंद साधन है।

हालांकि रेडियो के और भी कई उपयोग हैं, मसलन पुलिस व सेना इसे अपने विभागीय संचार तंत्र के रूप में इस्तेमाल करते हैं। विमान यात्राओं के संचालन में भी इसका प्रयोग होता है। समुद्री यात्राओं, पर्वतरोहण अभियानों व अन्य साहसिक अभियानों में भी इसका इस्तेमाल संचार के विश्वस्त साधन के रूप में किया जाता है। वैसे तो ध्वनि की रफ्तार 345 मीटर प्रति सेकेंड होती है लेकिन रेडियो प्रसारण की तकनीक के कारण इसकी गति 1,86,000 मील प्रति मिनट हो जाती है। इसी कारण रेडियो के जरिए लाखों मील दूर तक की बात हम एक सैकेंड से भी कम समय में सुन लेते हैं।

रेडियो क्योंकि बोले जाने वाले शब्दों का माध्यम है। इसलिए इसके समाचारों की भाषा भी प्रिंट मीडिया के समाचारों से कुछ अलग होती है। इसलिए रेडियो के लिए समाचार बनाते समय कुछ सावधानियां जरूरी हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि रेडियो आज भी इलेक्ट्रानिक संचार माध्यम में अग्रणी है और एफएम की युवाओं के बीच बढ़ती लोकप्रियता ने इसे एक प्रकार से फिर से पुर्नजीवित कर दिया है और एक बार फिर लोग रेडियो की ओर से मुड़ने लगे हैं।

टेलीविजन

भारतीय पौराणिक ग्रंथ महाभारत की कथा से संजय द्वारा धृतराष्ट्र के पास बैठे–बैठे महाभारत के युद्ध क्षेत्र का आंखों देखा हाल सुनाने का उल्लेख भले ही मिलता हिो मगर आधुनिक टेलीविजन के इतिहास को अभी 100 वर्ष भी पूरे नहीं हुए हैं। सन् 1990 में पहली बार रूसी वैज्ञानिक कोंस्तातिन पेर्स्की ने सबसे पहली बार टेलीविजन शब्द का इस्तेमाल चित्रों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेजन वाले एक प्रारम्भिक यंत्र के लिए किया था। 1922 के आसपास पहली बार टेलीविजन का प्रारम्भिक सार्वजनिक प्रदर्शन हुआ था। 1926 में इंग्लैण्ड के जॉन बेयर्ड और अमेरिका के चार्ल्स फ्रांसिस जेनकिसं ने मैकेनिकल टेलीविजन के जरिए चित्रों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेजने का सफल प्रयोग किया।

पहले इलेक्ट्रानिक टेलीविजन का आविष्कार का श्रेय रूसी मूल के अमेरिकी वैज्ञानिक ब्लादीमिर ज्योर्खिन को दिया जाता है। कहते हैं कि उन्होंने 1927 में टेलीविजन का आविष्कार किया। हालांकि जापान, रूस, जर्मनी, फ्रांस और ब्रिटेन भी दावे करते रहे हैं कि पहला इलेक्ट्रानिक टेलीविजन उनके देश में बनाया गया। बहरहाल 1939 में पहली बार अमेरिकी रेडियो प्रसारण कम्पनी आरीसए ने न्यूयार्क विश्व मेले के उद्घाटन और राष्ट्रपति रूजवैल्ट के भाषण का सीधा टेलीविजन प्रसारण किया। बीबीसी रेडियो 1930 में और बीबीसी टेलीविजन 1932 में स्थापित हो गया था। इसने 1936 के आसपास कुछ टीवी कार्यक्रम बनाए भी। इसी बीच दूसरा विश्वयुद्ध छिड़ जाने से टीवी के विकास की रफ्तार कम हो गई।

1 जुलाई 1941 को अमेरिकी कम्पनी कोलम्बिया ब्रॉडकास्टिंग सर्विस ने न्यूयार्क टेलीविजन स्टेशन से रोजाना 15 मिनट के न्यूज बुलेटिन की शुरूआत की। यह प्रसारण सीमित दर्शकों के लिए था। विश्वयुद्ध की समापित के बाद तकनीकी विकास के दौर में 1946 में रंगीन टेलीविजन के आविष्कार ने टीव न्यूज के विकास में एक बड़ी छलांग का काम किया। 50 के दशक में अमेरिकी प्रसारण कम्पनी एनबीसी और एनसीबीएस ने रंगीन न्यूज बुलेटिन और बीबीसी टीवी ने भी दैनिक न्यूज बुलेटिन शुरू किए। 1980 में टेड टर्नर ने सीएनएन के 24 घंटे के न्यूज चैनल की शुरूआत की 24 घंटे का यह न्यूज चैनल जल्द ही लोकप्रिय हो गया। खासकर 1986 में स्पेस शटल चैलेजर के दुर्घटनाग्रस्त होने के सजीव प्रसारण ने इसे बहुत ख्याति प्रदान की। लगभग 10 वर्ष बाद 1989 में ब्रिटेन में भी रूपर्ट मर्डोक ने लन्दन से स्काई न्यूज के नाम से 24 घंटे का न्यूज चैनल शुरू किया जबकि टीवी न्यूज में काफी नाम कमा चुके बीबीसी को 24 घंटे का न्यूज चैनल शुरू करने के लिए 1997 तक इन्तजार करना पड़ा। आज विश्व के प्राय: हर देश में एक से अधिक न्यूज चैनल है। इधर पश्चिमी टीव न्यूज चैनलों का एकाधिकार और दबदबा लगातार कम होता जा रहा है और अल जजीरा जैसे चैनल टीवी खबरों की दुनिया में पश्चिमी एकाधिकार को कड़ी चुनौती देने लगे हैं।

भारत में टेलीविजन का आगमन वर्ष 1959 में हो गया था। प्रारम्भ में यह माना गया था कि भारत जैसे गरीब देश में

इस महंगी टैक्नोलॉजी वाले माध्यम का कोई भविष्य नहीं है। लेकिन धीरे-धीरे यह धारण खुद-ब-खुद बदलती चली गई। 1964 में दूरदर्शन पर पहली बार समाचारों की शुरूआत हुई। शुरू मे यह रेडियो यानी आकाशवाणी के अधीन था। इसका असर दूरदर्शन के समाचारों पर भी दिखाई देता था। लेकिन 1982 में दिल्ली में हुये एशियाई खेलों के आयोजन, एशियाड के साथ देश में रंगीन टेलीविजन की शुरूआत और इस तरह यहीं से दूरदर्शन के समाचारों में एक नए युग की शुरूआत भी हुई। इसी दौर में हिंदी के अलावा उर्दू, संस्कृत और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के न्यूज बुलेटिन भी शुरू हुए। संसदीय चुनावों के कवरेज ने दूरदर्शन न्यूज को काफी लोकप्रिय बनाया।

भारतीय टेलीविजन में निजी क्षेत्र का खबरों की दुनिया में प्रवेश 1994 में हुआ। पहले जैन टीवी और फिर जी टीवी ने न्यूज बुलेटिन शुरू किए। पहला चौबीस घंटे का न्यूज चैनल भी जैन टीवी ही था। जी न्यूज 1 फरवरी 1999 को चौबीस घंटे का न्यूज शुरू किया जो आज भी चल रहा है। इसी बीच बीओआई ने भी न्यूज़ चैनल शुरू किया, मगर खर्चीले प्रबन्धन ने उसे भी जल्द ही डुबा दिया। लेकिन भारत में टीवी न्यूज को सही मायनों में स्थापित करने का श्रेय अगर किसी को दिया जा सकता है। तो वो है 'आज तक'। 17 जुलाई 1995 को आज तक 20 मिनट के न्यूज बुलेटिन के तौर पर दूरदर्शन में शुरू हुआ था। इसकी सफलता की नींव पर 31 दिसम्बर 2000 को आज तक के 24 घंटे के निजी चैनल की शुरूआत हुई।

आज देश में 150 के करीब निजी न्यूज चैनल हैं और सब अपनी-अपनी विशिष्टताओं के साथ खबरों की दुनिया में अपना प्रदर्शन कर रहे हैं। तकनीक के सस्ते होते जाने से भी टीवी न्यूज़ का विस्तार तेजी से हुआ है। पहले न्यूज चैनल शुरू करने में 50 करोड़ से अधिक खर्च आता था तो आज महज कुछ करोड़ रुपयों में न्यूज चैनल शुरू हो जाता है। मगर तकनीक सस्ती होने के साथ ही टीवी न्यूज में भी सस्तापन आने लगा है, गम्भीरता और लोक जिम्मेदारी की भावना कम होने के से साथ-साथ सनसनी और नाटकियता बढ़ने लगी है। टीवी न्यूज के भविष्य के लिए यह शुभ संकेत नहीं कहे जा सकते, मगर विशेषज्ञ मानते हैं कि यह दौर जल्द ही खत्म हो जाएगा।

आगे इस मीडिया में भी रही कुछ कमियों को डिजिटल मीडिया तकनीकों के आने से आकर्षक बनाने की नयी राहें खुल गयी। लेकिन मनुष्य की संचार को और भी अधिक सुगम व आकर्षक बनाने की चाह खत्म नहीं हुई। संचार विज्ञानी इससे संतुष्ट नहीं थे कि विभिन्न संचार माध्यमों को अलग-अलग तकनीकों पर प्रयोग करें। क्यों ना कोई ऐसी व्यवस्था हो जिस पर मीडिया के प्रिंट, ऑडियो, वीडियो आदि अनेकानेक प्रारूपों का एक साथ एक प्लेटफॉर्म पर लाभ व आनंद उठाया जा सके। इसी चाह के परिणामस्वरूप इंटरनेट नये मीडिया का जन्म हुआ।